अमेरिका–चीन रणनीतिक प्रतिद्वंद्विताः नये शीत युद्ध की ओर

*डॉ. राजकुमार बैरवा

शोध सारांश –

वैश्विक राजनीति का प्रमुख मुद्दा अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता हैं। यह प्रतिस्पर्धा न केवल सैन्य या वैचारिक क्षेत्र तक सीमित हैं, बल्कि आर्थिक, तकनीकी और भू–राजनीतिक क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से फैली हुई हैं। व्यापार युद्ध, 5G और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी उभरती तकनीकों में प्रतिस्पर्द्धा तथा दक्षिण चीन सागर और ताईवान जैसे संवेदनशील मुद्दों नें दोनों देशों के संबंधों को ओर जटिल बना दिया हैं। ताइवान के मुद्दे पर चीन के साथ अमेरिका के संबंध अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सबसे गर्म और बहस वाले क्षेत्रों में से एक रहे हैं। हालांकि इस प्रतिस्पर्द्धा में शीत युद्ध जैसी कुछ समानताएँ दिखाई देती हैं, जैसे दो महाशक्तियों के बीच प्रमुखता की होड़, लेकिन परिदृश्य में आर्थिक परस्पर निर्भरता और वैश्वीकरण के कारण यह पारंपरिक शीत युद्ध जैसा नहीं हैं। अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता केवल वैश्वीकृत विश्व व्यवस्था पर हावी होने के लिए एक शक्ति प्रतियोगिता नहीं हैं बल्कि यह दोनों केबीच सीमाओं के टकराव के बारे में अधिक हैं प्रत्येक अपने मूल मूल्यों को सार्वभौमिक बनाने के लिए प्रेरित हैं जबकि दूसरे को हाशिए पर डाल रहा हैं। इस प्रतिद्वंद्विता का प्रभाव वैश्विक शक्ति संतुलन, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और विकासशील देशों की नीतियों पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। अमेरिका–चीन संबंधों को ''नये शीत युद्ध'' समझना आंशिक रूप से उचित हैं लेकिन इसे एक जटिल और बहुआयामी प्रतिस्पर्द्धा के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

कुन्जी शब्द–रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता, नये शीत युद्ध, शक्ति संतुलन, व्यापार युद्ध, ताइवान मुद्दा, तकनीकी प्रतिस्पर्द्धा, इंडो–पैसिफिक रणनीति, भू–राजनीति।

प्रस्तावना–अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन लगातार बदलता रहता हैं। 1949 में कम्युनिस्ट चीन के जन्म के बाद से अमेरिका – चीन संबंधों ने तीन अलग–अलग चरणों का अनुभव किया हैं। पहला चरण (1949– 1971) चीन के प्रति सामान्य अमेरिकी शीत युद्ध शत्रुता द्वारा चिन्हित किया गया था क्योंकि इसे अपने कट्टर प्रतिद्वंदी सोवियतसंघ के जूनियर कम्यूनिस्ट भागीदार के रूप में माना जाता था। अमेरिका सोवियत नेतृत्व वाले कम्युनिस्ट ब्लॉक के भीतर दरार पैदा करने के रास्ते तलाश रहा था। अमेरिका – चीन संबंधों का दूसरा चरण (1971 – 2010) दोनों के बीच क्रमिक सामान्यीकरण और सहयोग द्वारा चिन्हित हैं। इस अवधि के दौरान अमेरिका ने 1978 में देंग शियाओपिंग द्वारा शुरू की गयी चीन की ओपन डोर पॉलिसी का स्वागत किया, जिसने चीन द्वारा उदार आर्थिक नीति को धीरे – धीरे अपनाने की शुरूआत की। अमेरिका ने चीन को डब्ल्यूटीओ में शामिल होने में भी मदद की। चीन ने अमेरिका और बाकी दुनिया को अपने ''शांतिपूर्ण उदय'' के बारे में समझाने की भी कोशिश की। इस अवधि के दौरन चीन ने 1991 और 2003 में इराक के साथ – साथ 2001 में अफगानिस्तान में अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य अभियानों का भी समर्थन किया। इससे आर्थिक क्षेत्र में भी दोनों के बीच सहयोग बढ़ा। जल्द ही चीन अमेरिका के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार के रूप में उभरा। 2012 में शी जिनपिंग द्वारा सत्ता संभालने के साथ, न केवल शांतिपूर्ण उदय के सिद्धांत को छोड़ दिया गया बल्कि लोकतांत्रिक सुधारों के भाग्य पर भी मुहर लगा दी गई। यह

अमेरिका–चीन संबंधों के दूसरे चरण के अंत को चिन्हित करता हैं। अमेरिका–चीन संबंधों के तीसरे चरण (2010 से अब तक) में ताइवान मुद्दा, दक्षिण चीन सागर, चीनी मानवाधिकार रिकॉर्ड, व्यापार और प्रौद्योगिकी, विभिन्न मुद्दों पर चीनी आक्रामकता, अपने राजनीतिक प्रभाव को फैलाने के लिए बीआरआई जैसी चीन की नई पहल और क्वाड के पुनरूद्धार ओर एयूसीयूयूएस (तीन राष्ट्रो–आस्ट्रेलिया का सैन्य गठबंधन) के गठन जैसी नई पहलों के माध्यम से चीन को रोकने के अमेरिकी प्रयास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दोनों के बीच बढ़ती कटुता और प्रतिद्वंद्विता देखी जा रही है। चीन इन अमेरिकी पहलों को शीत युद्ध की मानसिकता का परिणाम बताता हैं, जिसका अनुसरण अमेरिका करता हैं।

2017 में ट्रम्प शासन के दौरान अमेरिका द्वारा अनावरण की गई नई सुरक्षा रणनीति ने चीन को अमेरिकी हितों और वैश्विक प्रभाव के लिए नंबर एक वैश्विक खतरे के रूप में पहचाना। इस दौरान अमेरिका ने चीनी आयात पर व्यापार प्रतिबंध लगाया, सुरक्षा खतरा पैदा करने के लिए हुआवेई जैसी अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियों पर प्रतिबंध लगा दिया, ताइवान को हथियारों की आपूर्ति में वृद्धि की, हांगकांग में चीनी सत्तावादी नीतियों का विरोध किया, 2017 में चतुष्कोणीय गठबंधन क्वाड (चार देशों–अमेरिका, भारत, आस्ट्रेलिया और जापान) को पुनर्जीवित किया और चीन पर कोविड वायरस की उत्पति के लिए आरोप लगाया। चीन ने इन मुद्दों पर अमेरिका के रूख का सक्रियता से विरोध किया। बाइडन प्रशासन ने प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए 15 सितंबर 2021 को एयूकेयूएस नामक त्रिपक्षीय सैन्य गठबंधन बनाने की पहल की। चीन ने अमेरिका की इस पहल को अपने प्रभाव को रोकने का एक हथियार करार दिया। जबकि अमेरिका आधिकारिक तौर पर ''वन चाइना पॉलिसी'' का पालना करता हैं, ताइवान को चीन का हिस्सा मानता है, लेकिन अन्यथा इसने ताइवान के साथ अपने राजनीतिक और रक्षा संबंधों को ओर मजबूत किया हैं। चीन बल के उपयोग से भी मुख्य भूमि के साथ ताइवान के अंतिम विलय को बनाए रखता हैं। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी ने 2 अगस्त, 2022 को ताइवान का दौरा किया जबकि चीनी सेना ने ताइवान स्ट्रेट में हाई प्रोफाइल सैन्य अभ्यास किया। यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर अमेरिका–चीन संबंध खराब हो गए हैं।

चीन–रूस रणनीतिक साझेदारी लगातार मजबूत हो रही हैं, जिससे अमेरिकी नीति – निर्माताओं के मन में आशंका पैदा हो गई हैं। हिंद प्रशांत क्षेत्र के अलावा, चीन मध्य–पूर्व, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और यूरोप जैसे दुनिया के अन्य हिस्सों में भी अपना आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव फैला रहा हैं। चीन ने हाल ही में मध्य पूर्व में अमेरिकी रणनीति पर सेंध लगाने की कोशिश की हैं। अमेरिका ने इजरायल और अरब देशों के साथ संबंध विकसित करने के लिए 2021–22 के दौरान मध्य पूर्व में अब्राहम समझोते की मध्यस्थता की। यह इस क्षेत्र में ईरान को अलग–थलग करने की अमेरिकी रणनीति का एक अहम हिस्सा था। लेकिन चीन ने मार्च, 2023 में सऊदी अरब और ईरान के बीच एक राजनयिक समझौते की सफलतापूर्वक मध्यस्थता की है, जो कि लंबे समय से कट्टर प्रतिद्वंदी थे। यह चीनी पहल अमेरिका द्वारा शुरू किए गए अब्राहम समझौते के रणनीतिक लाभ को शून्य कर देती हैं।

अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता, जो हर उद्योग क्षेत्र में सक्रिय रही हैं, अब अनुसंधान और विकास के साथ–साथ नई प्रौद्योगिकियों के विकास पर केंन्द्रित हैं। वर्तमान में प्रौद्योगिकी भू–राजनीतिक हो गई हैं और व्यापार संघर्ष एक तकनीकी संघर्ष में बदल गया हैं। अमेरिका और चीन के बीच द्विपक्षीय प्रौद्योगिकी इंटरफेस लंबे समय से विवाद का एक प्रमुख कारण रहा हैं और हाल ही में बाइडन प्रशासन के चीन के खिलाफ निर्यात नियंत्रण उपायों की कार्यवाही ने दोनों देशों के बीच महान शक्ति संवाद को प्रेरित किया है। जैसे ही अमेरिका के साथ तनाव बढता हैं, चीन तकनीकी आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए देश के सभी संसाधनों को संयोजित करने के लिए भी प्रतिबद्ध है, जो सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को उजागर करता हैं।

शिक्षा, अनुसंधान और विकास, नवाचार, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों, सूचना प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में अमेरिका ने लंबे समये से तकनीकी प्रभुत्व का आनंद लिया हैं। हालांकि चीन अब इस आधिपत्य के लिए बड़ा खतरा पैदा कर रह हैं। अमेरिका और चीन के बीच टकराव के परिणामस्वरूप सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, सेमीकंडक्टर, 5जी नेटवर्क प्रौद्योगिकी और डेटा आधारित सुरक्षा अनुप्रयोग सभी आयात और निर्यात प्रतिबंधों के अधीन हैं। ''प्रौद्योगिकी युद्ध नए व्यापार युद्ध बन रहे हैं''। अमेरिका और चीन एक भू–राजनीतिक टकराव में फिर से लगे हुए है जिसमें प्रौद्योगिकी को सबसे आगे रखा हैं।

चीन ने ''मेड इन चाइना'' (एमआईसी) 2025 पॉलिसी पर बल दिया है जो तकनीकी श्रेष्ठता की खोज में एक महत्वपूर्ण चरण की शुरूआत को चिन्हित किया हैं। यह रणनीतिचीन को एक प्रमुख विनिर्माण केन्द्र में बदलने के लिए रोबोटिक्स, विमानन और इलेक्ट्रिक और बायोगैस जैसे नए ऊर्जा वाहनों जैसे उच्च तकनीक उद्योगों के विकास का आह्वान करती हैं। एमआईसी 2025 में चीनी उद्यमों को विकसित करने पर जोर दिया गया है जो विदेशी प्रौद्योगिकी आयात पर चीन की निर्भरता को कम करने के लिए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा कर सकते हैं। अपनी विनिर्माण क्षमता, गुणवता और दक्षता बढ़ाने के लिए, स्मार्ट विनिर्माण वायरलेस सेंसेर और रोबोट के साथ इंटरनेट को एकीकृत करता हैं।

2014 में शुरू की गई चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) की आक्रामक राष्ट्रीय रणनीति को सैन्य नागरिक संलयन के रूप में जाना जाता हैं। अपनी सुरक्षा आर्थिक और सामाजिक विकास योजनाओं को मिलाकर, सीसीपी एक एकीकृत राष्ट्रीय रणनीतिक प्रणाली और क्षमताओं को बनाने के लिए अपनी राष्ट्रीय विकास रणनीति का पीछा करता हैं। अत्याधुनिक मिसाइल प्रौद्योगिकी का प्रसार विशेष रूप से हिंद प्रशांत में आज वैश्विक भू–राजनीति के केन्द्र बिंदु के रूप में बेरोकटोक जारी हैं। चीन तथाकथित पहली द्वीप श्रृंखला के साथ सटीक स्ट्राइक मिसाइलों का एक नेटर्वक स्थापित कर रहा हैं, जो तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप को रोकने या पराजित करने के लिए अपनी तटरेखा के चारों ओर एक रक्षात्मक बुलबुला बना रहा हैं, अमेरिका चीन को रोकने के लिए प्रशांत क्षेत्र में बैलेस्टिक मिसाइलों की श्रृंखला तैनात कर एक 'मिसाइल दिवार' का निर्माण कर रहा हैं।

बीजिंग मध्य पूर्व में अपनी पहुँच का विस्तार कर रहा हैं। जो पारंपरिक रूप से वाशिंगटन का खेल का मैदान रहा हैं। वह बड़े भू–राजनीतिक विकास, सऊदी–ईरान के संबंधों में नरमी, बीजिंग की मध्यस्थता ने वाशिंगटन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का नया आधिपत्य बनने की दिशा में रेड ड्रेगन के लिए नए प्रवेश खोले हैं। यह न केवल एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में चीन की विश्वसनीयता को मजबूत करता हैं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय शांति निर्माण के क्षेत्र में बीजिंग के लिए और अधिक द्वार खोलता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के अविश्वसनीय दबाव का सामना करते हुए ईरान के नेता नियमित रूप से मास्को और बीजिंग के अपने समकक्षों के साथ बातचीत कर रहे हैं।

दोनों महाशक्तियों के बीच नए शीत युद्ध ने विभिन्न शक्ति गुटों का निर्माण किया है जबकि अमेरिका रूस से निपटने के लिए यूके, फ्रांस सहित अपने पश्चिमी यूरोपीय सहयोगियो पर जोर दे रहा हैं, उससे हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीनी प्रभाव को रोकने के लिए एशिया में नई दिल्ली, टोक्यों और कैनबरा के साथ गठबंधन किया है जो चीन की अभूतर्पू अंतर्राष्ट्रीयराजनीति के लिए खतरनारक संकेत भेजती है। नए युग का संरक्षणवादी दृष्टिकोण, सैन्य तनाव में वृद्धि, उलझी हुई युद्ध रणनीति और व्यापार बाधाएँ चीन और अमेरिका के बीच नए शीत युद्ध की कुछ पूर्णधारणाएँ हैं। रूस–यूक्रेन संघर्ष ने पूर्व–पश्चिम वैचारिक विभाजन को मजबूत किया हैं। इंडो–पैसिफिक विश्व की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। एक और जहाँ अमेरिका व्यापार, सुरक्षा और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कहे जाने वाले इस सामरिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण अक्सर इस क्षेत्र में तनाव के बिन्दु उभरते रहते हैं।

दूरसंचार क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के मध्य में प्रतिस्पर्द्धा जगजाहिर है। अमेरिका के पास

दूरसंचार उपकरण आपूर्तिकर्ता की कमी हैं जो चीनी कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्द्धा कर सके। चीनी कंपनी हुआवेई वैश्विक 5जी बाजार पर हावी हैं। 5जी दूरसंचार में चीनी प्रभुत्व ने विशेष रूप से इसके दूरसंचार उपकरण निर्माता हुआवेई द्वारा, अमेरिकी सरकार के अंदर राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं को उठाया हैं। 5जी क्षेत्र में प्रभुत्व भी अमेरिका के लिए आर्थिक सुरक्षा का विषय हैं, क्योकि 5जी अनुमान जीएसएमए द्वारा 2034 तक वैश्विक अर्थव्यवस्था को 565 अरब यूएसडी के योगदान से लगाया गया हैं।

चीन और अमेरिका के संबंध आज के वैश्विक परिदृश्य के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैं। इन दोनों देशों के बीच संतुलन और सहयोग न केवल उनकी अपनी प्रगति के लिए बल्कि पूरे विश्व की शांति, स्थिरता और विकास के लिए आवश्यक हैं। दोनों देशों को सकारात्मक रूख अपनाते हुए शांतिपूर्ण तरीके से आगे बढ़ना चाहिए। वही यदि प्रतिस्पर्द्धा और संघर्ष बढ़ता हैं, तो इसका प्रभाव पूरी दुनिया पर नकारात्मक रूप से पड़ेगा। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को भी इन दोनों महाशक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने में सक्रिय भुमिका निभानी चाहिए ताकि विश्व में शांति और स्थिरता बनी रहें।

***सह आचार्य–राजनीति शास्त्र**
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय, दौसा (राज.)

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. किंसिजर, हेनरी, ''ऑन चाइना'' पेंगुइनबुक्स/एलनलेन 2011
2. वोगेल, एज्रा, ''देग जियापिंग एण्ड दी ट्रांसफॉरमेशन ऑफ चाइना'', हार्वर्ड, युनिवरसिटी प्रेस 2011
3. एलिसन, ग्राहम, ''डेस्टिनेड फॉर वॉर : केन अमेरिका एण्ड चाइना एस्किप थूसाइडेज ट्रैप ?'', हॉटन मिफ्लिन हाइर्कोट, 2017
4. शिमबौध, डेविड, ''चाइना एण्ड द वर्ल्ड'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020
5. मिलर, क्रिस, ''चिप वॉर : दी फाइट फॉर दी वर्ल्ड ज मोस्ट क्रिटिकल टेक्नोलॉजी'' स्क्रिब्नर पब्लिकेशन, 2022
6. वर्ल्ड फोकस, ''अमेरिका–चीन संबंध'' अंक–133, अप्रैल 2023
7. कृष्णन, अनान्य''बैक टू दी फ्यूचर ऑफ चाईना,ज कम्यूस्टिस प्रोफाइल्स, द हिन्दू, 27 जून 2021
8. विनलैण्ड डॉन, ''द टेकवार बिटविन अमेरिका एण्ड चाइना इज जस्ट गेटिंग स्टारटेड'', द इकॉनोमिस्ट, 18 नवंबर, 2022.